जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

हिण्डौन सिटी

Rashtradoot

फोनः- 230200, 230400 फैक्सः- 07469-230600 | वर्षः 14 | संख्याः 285 | प्रभात | हिण्डौन सिटी, सोमवार 15 अगस्त, 2022 | पो. रजि.SWM-RJ-6069/2017-18 | पृष्ठ 8 | मूल्य 2.00 रु.

''शूबिल'', इस अफ्रीकन पक्षी का नाम अगर मॉनस्टर फेस या डैथ पैलिकन होता तो बेहतर होता। इसे पृथ्वी का सबसे ज्यादा डरावना पक्षी भी कहा जा सकता है, जिसके करीब जाने से डर लगता है। अफ्रीका के पूर्वी कटिबंधीय वनों के दलदली भागों में रहने वाला यह पक्षी उन्हीं जीवों का शिकार करता है जो उससे थोड़े छोटे होते हैं। लंगफिश, ईल, कैट फिश जैसी बड़ी मछलियों के साथ-साथ ये पक्षी नाइल मॉनीटर लिज़र्ड, सांप और छोटे मगरमच्छों तक को खा जाते हैं। जी हां, सुनने में आश्चर्यजनक लगता है, किन्तु सत्य है। शिकार करते समय शूबिल मूर्ति की तरह स्थिर खड़े हो जाते हैं और इंतजार करते हैं, जैसे ही कोई लंगफिश या मगरमच्छ का बच्चा पास से गुज़रता है ये उसे झपट लेते हैं और अपनी बड़ी सी चोंच से, पानी, घास पात और कीचड़ सहित उसे निगल लेते हैं। उसके बाद अपने बड़े से सिर को आगे-पीछे हिलाते हैं और भोजन के अलावा जो भी फालतू चीजें यह मुंह में चली जाती हैं उन्हें धीरे-धीरे बाहर निकालना शुरु कर देते हैं, जब मुंह में सिर्फ भोजन रह जाता है तब अपनी चोंच के तीखे किनारों से उसके टुकड़े करके निगल लेते हैं। काफी डरावना दृश्य होता है। लेकिन फिर भी इनसे प्रभावित हुए बिना भी नहीं रह सकते। शूबिल लम्बे समय तक पहुत पसंदीदा प्रजाति रहे हैं। प्राचीन मिस्र की कलाकृतियों में इन्हें देखा जाता है। प्राचीन अरब के लोग कथित रूप से इन्हें अबू मरखूब कहते थे जिसका अर्थ है ''फादर ऑफ ए स्लिपर''। डैनमार्क के विख्यात लकड़ी के जूतों जैसी नज़र आने वाली अपनी चोंच से ये पक्षी मशीनगन चलने जैसी आवाजें भी निकालते हैं। वैसे तो, अधिकतर समय ये शांत रहते हैं पर घोंसले के आसपास या किसी अन्य पक्षी से मिलते समय अपनी चोंच से पटपट जैसी डरावनी और तेज आवाजें निकालते हैं। इनकी एक और खास बात है कि, ये अपने पैरों पर शौच करते हैं, क्योंकि इससे उन्हें ठंडक मिलती है। शूबिल को, बोत्सवाना व ज़ैम्बिया के दलदली इलाकों में रहने वाले, सैमी अक्वैटिक एन्टिलोप (हिरण), रैड लैचवे का शिकार करते भी देखा गया है। सौ किलो से अधिक वजन वाले पूर्ण विकसित रैड लैचवे परभक्षियों से बचने के लिए पानी का इस्तेमाल करते हैं। तथापि, रैड लैचवे के बच्चे काफी छोटे होते हैं और अक्सर शूबिल का शिकार बन जाते हैं। शूबिल का पाचन तंत्र इतना मजबूत होता है कि ये किसी भी जानवर को खा सकते हैं। अक्सर पूछा जाता है कि, क्या ये भयानक पक्षी इंसानों को भी मार सकते हैं। यह देखते हुए कि, क्रोकोडाइल से युद्ध में उनकी विजय की संभावना होती है, शायद उत्तर ''हाँ'' हो, लेकिन अभी तक इंसान पर हमले की कोई जानकारी नहीं मिली है। शोधकर्ता इस प्रागैतिहासिक पक्षी और इसके घोसलें के 6 फीट करीब तक ही जा पाते हैं। वैसे ये इंसान पर हमला नहीं करते, केवल घूरते हैं लेकिन इनका घूरना भी काफी डरावना होता है।

अमेरिकी सांसदों का प्रतिनिधिमंडल भी ताईवान पहुंचा

अमेरिकी सांसदों के ताइवान दौरे से अब एक बार फिर चीन की आंख दिखाने की रणनीति फेल साबित हुई है

ताइपे/नई दिल्ली, 14 अगस्त। नैंसी पेलोसी की की यात्रा के 12 दिन बाद अमेरिकी सांसदों का एक प्रतिनिधिमंडल ताइवान का दौरा कर रहा है। पेलोसी के दौरे पर चीन सख्त आपत्ति जताई थी। इसके बाद भी अमेरिकी सांसद चीन की चेतावनी का दरकिनार करते हुए ताइपे पहुंच गए हैं। पेलोसी के दौरे के जवाब में चीन ने ताइवान के समुद्र और हवाई क्षेत्र के आसपास मिसाइलें दागी थीं और युद्धपोत तथा लड़ाकू विमान भेजे थे। अमेरिकी सांसदों के ताइवान दौरे के बाद अब एक बार फिर चीन की आंख दिखाने की रणनीति फेल साबित हुई है।

ताइवान में अमेरिकन इंस्टीट्यूट ने कहा है कि, पांच सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व मैसाचुसेट्स के डेमोक्रेटिक सांसद एड मार्के कर रहे हैं और एशिया की यात्रा के तहत रविवार और सोमवार को ताइवान में हैं। प्रतिनिधिमंडल के सदस्य अमेरिका-ताइवान संबंधों, क्षेत्रीय सुरक्षा, व्यापार, निवेश और अन्य मुद्दों पर चर्चा करने के लिए वरिष्ठ नेताओं से मुलाकात करेंगे। ताइवान के एक प्रसारक ने अमेरिकी सरकार के एक विमान के शाम 7 बजे के करीब ताइवान की राजधानी ताइपे में सोंगशान हवाई अड्डे पर उतरने का वीडियो प्रदर्शित किया।

- **ताईवान के एक प्रसारक ने अमेरिकी सरकार के एक विमान के शाम 7 बजे के करीब ताईवान की राजधानी ताइपे में सोंगशान हवाई अड्डे पर उतरने का वीडियो प्रदर्शित किया है।**
- **इस बीच चीन ने चेतावनी देते हुए कहा है कि, बाहरी ताकतों पर निर्भर रहने से ताईवान के अलगाववादियों को कुछ हासिल नहीं होगा और बाहरी ताकतें यह मंसूबा नहीं पालें कि 'ड्रैगन' को नियंत्रित करने के लिए ताइवान को 'बली का बकरा' बनाया जा सकता है।**

इस बीच चीन ने चेतावनी देते हुए कहा है कि, बाहरी ताकतों पर निर्भर रहने से ताइवान के अलगाववादियों को कुछ हासिल नहीं होगा और बाहरी ताकतें यह मंसूबा नहीं पालें कि 'ड्रैगन' को नियंत्रित करने के लिए ताइवान को 'बली का बकरा' बनाया जा सकता है।

चीन ने हाल ही में राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय न्याय के मौलिक हितों को बनाए रखने के अपने पक्ष को मजबूती से रखते हुए एक श्वेत पत्र जारी करके यह चेतावनी दी है।

'नये युग में ताइवान प्रश्न और चीन का पुनर्मिलन' शीर्षक से जारी श्वेत पत्र में कहा गया है, देश 'ताइवान स्वतंत्रता' , अलगाववादी ताकतों और बाहरी ताकतों के घिनौने राजनीतिक स्वभाव और भयावह मंशा को गहराई से खारिज करता है और उनके लिए एक कड़ी चेतावनी जारी करता है।

श्वेत पत्र में कहा गया है, चीन के 5,000 साल के इतिहास में, राष्ट्रीय एकीकरण और विभाजन का विरोध पूरे देश का एक सामान्य आदर्श और साझा परंपरा बना हुआ है। ताइवान प्राचीन काल से चीन के क्षेत्र का एक अभिन्न अंग रहा है। चीन से ताइवान अलगाव की बात करना गंभीर अपराध की श्रेणी में आता है, और ताइवान जलडमरूमध्य की दोनों ओर हमवतन के सामान्य हितों और चीनी राष्ट्र के मौलिक हितों को कमजोर करता है। ये रास्ता कहीं भी नहीं जायेगा। ताइवान सभी चीनी लोगों का है, जिसमें ताइवान के 23 लाख हमवतन भी शामिल हैं।

पत्र में यह भी कहा गया है, अलगाववाद ताइवान को रसातल में डूबो देगा और द्वीप के लिए आपदा के अलावा कुछ नहीं लाएगा। यह पूरे चीनी राष्ट्र के हितों को कमजोर करेगा और चीन के लोग कभी इसकी सहमति नहीं देंगे। यहाँ दुनिया में केवल एक चीन है, और ताइवान चीन का हिस्सा है। यह इतिहास और कानून द्वारा समर्थित एक निर्विवाद तथ्य है। ताइवान प्रश्न एक आंतरिक मामला है जिसमें चीन के मूल हित और चीनी लोगों की राष्ट्रीय भावनाएं शामिल हैं, और कोई बाहरी हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

श्वेत पत्र के अनुसार, राष्ट्रीय एकता और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा करना प्रत्येक संप्रभु राज्य का पवित्र अधिकार है। चीन शांतिपूर्ण विकास के लिए दढ़ता से प्रतिबद्ध है। साथ ही, यह किसी भी बाहरी हस्तक्षेप के तहत नहीं झुकेगा, और न ही यह अपनी संप्रभुता, सुरक्षा और विकास हितों पर किसी भी उल्लंघन को बर्दाश्त करेगा।

हम सबसे बहुत ईमानदारी के साथ काम करेंगे और शांतिपूर्ण एकीकरण के लिए अपनी पूरी कोशिश करेंगे। लेकिन हम बल प्रयोग का त्याग नहीं करते हैं, और हम सभी आवश्यक उपाय करने का विकल्प सुरक्षित रखते हैं।

'विभाजन की ''टू नेशन'' थ्योरी भाजपा के सावरकर ने ही दी थी'

छतीसगढ़ में कांग्रेस की भारत जोड़ो पद यात्रा के समापन के मौके पर मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने भाजपा पर बेहद आक्रामक आरोप लगाये

रायपुर, 14 अगस्त। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने भाजपा पर बड़ा हमला बोला है। मुख्यमंत्री बघेल ने कहा कि, देश के विभाजन के लिए गांधी या नेहरू नहीं बल्कि सावरकर और मोहम्मद अली जिन्ना हैं। छत्तीसगढ़ में 9 अगस्त से शुरू हुई कांग्रेस की भारत जोड़ो पद यात्रा का समापन रविवार 14 अगस्त को दुर्ग जिले के पाटन में हुआ। इस मौके पर एक सभा में छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने अपने संबोधन में ये बात कही।

- **मुख्यमंत्री बघेल ने कहा कि, टू नेशन थ्योरी का प्रस्ताव सावरकर ने दिया था और इसे मोहम्मद अली जिन्ना ने समर्थन दिया था।**

कांग्रेस की भारत जोड़ो पद यात्रा के समापन के मौके पर सीएम भूपेश बघेल ने देश की आजादी के लिए शहादत देने वाले वीर सपूतों को याद किया। इस दौरान कांग्रेस के सभी बड़े नेता और मंत्री मौजूद रहे। मुख्यमंत्री बघेल ने कहा कि, टू नेशन थ्योरी का प्रस्ताव सावरकर ने दिया था और इसे मोहम्मद अली जिन्ना ने समर्थन दिया था। बघेल ने आगे कहा कि, ये लोग विभाजनकारी हैं। उन्होंने कहा कि, देश की आजादी की लड़ाई में उनकी क्या भूमिका थी? सीएम बघेल ने कहा कि, आरएसएस का गठन 1925 में हुआ था। ये लोग अभी भी अंग्रेजों की आलोचना नहीं करते, बल्कि वे गांधी की आलोचना करते हैं।

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने इस आमसभा को संबोधित करते हुए कहा कि, आज के दिन देश का बंटवारा हुआ था। विभाजन के लिए बहुत से लोग महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू और सरदार वल्लभ भाई पटेल को दोषी मानते हैं। बघेल ने कहा, ''मैं कहता हूं कि, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संगठन आरएसएस 1925 में बना था। उस समय ये लोग क्या कर रहे थे। जब 1942 में अंग्रेजों भारत छोड़ो का नारा दिया गया। सभी पहली पंक्ति के नेताओं को जेल में ठूंस दिया गया था। उस समय यही आरएसएस के लोग श्यामा प्रसाद मुखर्जी से लेकर गोलवलकर तक यह सलाह दे रहे थे कि देश की आजादी की इस मुहिम को कैसे कुचला जाए।''

उन्होंने आगे कहा, ''ये लोग अंग्रेजों की मुखबिरी करने का काम करते थे। आज यदि देश का बंटवारा हुआ है तो इसके लिए सही मायने में सावरकर जिम्मेदार है। 1925 में सावरकर ने हिंदू महासभा में बोलते हुए कहा कि, इस देश के दो राष्ट्र बनने चाहिए। यही भाषा मोहम्मद अली जिन्ना बोल रहे थे।

इसलिए देश के बंटवारे के लिए गांधी जी जिम्मेदार नहीं, सावरकर और मोहम्मद अली जिन्ना जिम्मेदार हैं।''

अवकाश की सूचना

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर दिनांक 15 अगस्त को राष्ट्रदूत कार्यालय में अवकाश रहेगा। अतः दैनिक राष्ट्रदूत का अगला अंक 17 अगस्त को प्रकाशित होगा।

-सम्पादक

सलमान रश्दी की हालत स्थिर

न्यूयॉर्क, 14 अगस्त। प्रख्यात लेखक सलमान रुश्दी की हालत में सुधार हुआ है। रुश्दी को वेंटीलेटर से भी हटा दिया गया है और वो अब बात भी कर रहे हैं। उन पर एक दिन पहले न्यूयॉर्क में हमला किया गया था। अमेरिकी प्राधिकारियों ने इस हमले को लक्षित, बिना उकसावे का और पूर्व नियोजित बताया। मुंबई में जन्मे विवादास्पद लेखक रुश्दी को द सैटेनिक वर्सेज लिखने के बाद कई सालों तक इस्लामी चरमपंथियों से मौत की धमकियों का सामना करना पड़ा था। उन्हें न्यूजर्सी के 24-वर्षीय निवासी हादी मतार ने पश्चिमी न्यूयॉर्क राज्य में एक कार्यक्रम में चाकू मार दिया था।

- **उन्हें वैंटिलेटर से हटा दिया गया है तथा अब वे बात भी कर पा रहे हैं।**

चौटाउक्वा इंस्टीट्यूशन के अध्यक्ष माइकल हिल ने शनिवार रात को ट्वीट किया, सलमान रुश्दी अब वेंटीलेटर पर नहीं हैं और बातचीत कर रहे हैं। सभी लोग दुआएं कर रहे हैं।

दिग्गज निवेशक राकेश झुनझुनवाला का निधन

राकेश झुनझुनवाला शेयर बाजार के सबसे बड़े निवेशकों में से एक थे, वे जब कॉलेज में थे तभी से उन्होंने शेयर बाजार में हाथ आजमाना शुरू कर दिया था

मुंबई, 14 अगस्त। शेयर बाजार के दिग्गज निवेशक राकेश झुनझुनवाला का निधन हो गया है। बताया जा रहा है कि उन्होंने रविवार सुबह मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में अंतिम सांस ली। जानकारी के मुताबिक, कुछ सप्ताह पहले ही वह अस्पताल से डिस्चार्ज हुए थे। उनका निधन किन कारणों से हुआ है, अभी यह स्पष्ट नहीं हुआ है। झुनझुनवाला 62 साल के थे। जानकारी के मुतबिक, आज सुबह 6:45 मिनट पर उनका निधन हो गया। झुनझुनवाला के परिवार में उनकी पत्नी रेखा झुनझुनवाला, बेटी निश्था व दो बेटे आर्यमन और आर्यवीर हैं।

झुनझुनवाला के निधन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा, वह अद्भुत व्यक्ति थे। जीवन से भरपूर, हाजिर जवाबी और व्यावहारिक थे। उन्होंने कहा, झुनझुनवाला अपने पीछे आर्थिक दुनिया में अमिट योगदान छोड़ गए हैं। वह भारत की प्रगति को लेकर बहुत जुनूनी थे।

- **झुनझुनवाला ने 1985 में 5,000 रुपये से निवेश की शुरुआत की थी। सितंबर, 2018 तक यह निवेश बढ़कर 11,000 करोड़ रुपये हो गया था। जानकारी के मुताबिक, वर्तमान में झुनझुनवाला की कुल संपत्ति 43 हजार करोड़ रुपये से अधिक है।**
- **राकेश झुनझुनवाला की आयु 62 साल थी, उन्हें कार्डिएक अरैस्ट के बाद मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में भर्ती कराया गया था।**

ब्रीच कैंडी अस्पताल की डॉ. प्रतीत समदानी ने बताया कि राकेश झुनझुनवाला को अचानक कार्डियक अरेस्ट हुआ, जो उनकी मौत का कारण बना। वह क्रोनिक किडनी रोग से भी पीड़ित थे, क्रोनिक डायलिसिस पर थे। वह मधुमेह के रोगी थे और हाल ही में उनकी एंजियोप्लास्टी हुई थी।

कई तरह के व्यापारों में निवेश करने वाले राकेश झुनझुनवाला ने हाल ही में अकासा एयरलाइंस पर भी निवेश किया था। इसमें 40 प्रतिशत हिस्सेदारी झुनझुनवाला के पास थी।

कुलगाम में ग्रनैड हमला, एक जवान शहीद

श्रीनगर, 14 अगस्त। जम्मू कश्मीर के कुलगाम जिले में ग्रेनेड हमले में एक पुलिसकर्मी की मौत हो गयी। पुलिस ने रविवार को बताया कि, यह घटना शनिवार रात को दक्षिण कश्मीर जिले के कैमोह इलाके में हुई। कश्मीर मंडल की पुलिस ने ट्वीट किया, ''कुलगाम के कैमोह में बीती रात ग्रेनेड हमला किया गया। इस आतंकी घटना में पुंछ के मेंढर में तैनात ताहिर खान नामक पुलिसकर्मी घायल हो गया।'' पुलिस ने बताया कि, घायल पुलिसकर्मी को अनंतनाग के जीएमसी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उनकी मौत हो गयी। 13 अगस्त को श्रीनगर में अली जान रोड, ईदगाह के पास आतंकियों की ओर से सुरक्षाबलों पर ग्रेनेड फेंका गया था।

- **शनिवार देर रात आतंकियों ने पुलिस पर ग्रनैड हमला किया जिसमें एक पुलिसकर्मी शहीद हो गया।**

महाराष्ट्र में मंत्रालयों के मामले में भाजपा भारी पड़ी शिंदे गुट पर

वित्त, गृह, जल संसाधन एवं आवासन विभाग जैसे चार मंत्रालय उप मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस ने अपने पास रखे

मुंबई, 14 अगस्त। महाराष्ट्र में एकनाथ शिंदे सरकार के कैबिनेट विस्तार के बाद मंत्रालयों का बंटवारा भी हो चुका है। अब सवाल यह उठता है कि, मंत्रालयों के बंटवारे में किसकी चली है। जिस तरह से विभाग बांटे गए हैं, उससे स्पष्ट है कि, इसमें देवेंद्र फडणवीस ही बीस साबित हुए हैं। इसके साथ ही यह भी साफ हो चुका है कि, भले ही भाजपा ने उन्हें शिंदे सरकार में डिप्टी सीएम पद दिया है, लेकिन बाकी मामलों में फ्री हैंड दिया गया है।

रविवार को घोषित शिंदे सरकार के विभागों के बंटवारे पर नजर डालें तो फडणवीस का मास्टरस्ट्रोक साफ दिखेगा। असल में एनसीपी ने महाविकास अघाड़ी सरकार में शिवसेना को सीएम पद देकर अहम विभाग अपने पास रखे थे। अब भाजपा के डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस ने भी यही फॉर्मूला यूज किया है। ध्यान देने वाली बात यह है कि फडणवीस ने उन चार विभागों को अपने पास रखा है, जो एनसीपी के चार बड़े नेताओं के पास थे। इसमें अजित पवार का वित्त, दिलीप वलसे पाटिल का होम, जयंत पाटिल का जल संसाधन और जितेंद्र आव्हाड का आवास विभाग अपने पास रखा है। इस तरह से देखा जाए तो शिंदे-फडणवीस सरकार की कैबिनेट में भाजपा ने ज्यादातर मलाईदार हिसाब अपने ही नेताओं के पास रखा

- **इसके साथ ही यह भी साफ हो चुका है कि, भले ही भाजपा ने उन्हें शिंदे सरकार में उप मुख्यमंत्री पद दिया है, लेकिन बाकी मामलों में उन्हें फ्री हैंड दिया गया है।**
- **भाजपा को मिले मंत्रालय-गृह मंत्रालय, राजस्व मंत्रालय, हाउसिंग, महिला एवं बाल विकास, वित्त, उर्जा, गृह निर्माण, सिंचाई इरिगेशन, पर्यटन। सहकारिता, ओ.बी.सी. मामलों का मंत्रालय हायर एंव टैक्निकल एजुकेशन, वन मंत्रालय, पीडब्लूडी, मेडिकल एजुकेशन, ग्रामीण विकास, फूड एंड सिविल सप्लाई, आदिवासी विकास, टैक्सटाइल एवं लेबर।**

बता दें कि यह सभी विभाग ऐसे हैं, जिनका आम जनता से सीधा ताल्लुक है। इन विभागों को अपने पास रखने के साथ ही भाजपा ने अपनी मंशा साफ कर दी है। भाजपा के पास यह विभाग होने से महाराष्ट्र में आम लोगों से उसका संपर्क बढ़ेगा। इसके साथ ही जनहित के फैसलों को लागू करते हुए भाजपा यहां पर पार्टी विस्तार की अपनी पॉलिसी पर भी काम कर सकेगी। महाविकास अघाड़ी सरकार में यह खेल एनसीपी खेल रही थी। अब फडणवीस ने भी बड़े ही सधे अंदाज में यह चाल चली है।

भाजपा को मिले मंत्रालय-

गृह मंत्रालय, राजस्व मंत्रालय, हाउसिंग, महिला एवं बाल विकास, वित्त, उर्जा, गृह निर्माण, सिंचाई इरिगेशन, पर्यटन। सहकारिता, ओबीसी मामलों का मंत्रालय हायर एंव टेक्निकल एजूकेशन, वन मंत्रालय, पीडब्लूडी, मेडिकल एजूकेशन, ग्रामीण विकास, फूड एंड सिविल सप्लाई, आदिवासी विकास, टेक्सटाइल,लेबर।

शिंदे गुट के पास मंत्रालय-

नगर विकास, एफ डी ए, जल आपूर्ति, इंड्रस्ट्री, स्वास्थ्य, कृषि, शिक्षा, आबकारी मंत्रालय, स्वास्थ्य, रोजगार गारंटी स्कीम।

38 साल बाद मिला शहीद का शव

नैनीताल, 14 अगस्त (वार्ता)। दुनिया के सबसे दुर्गम युद्ध क्षेत्र सियाचिन से 38 साल बाद उत्तराखंड के एक जवान का शव बरामद हुआ है। सेना की ओर से रविवार को इसकी जानकारी हल्द्वानी में रह रहे शहीद की पत्नी व परिजनों को दी गयी। लंबे समय बाद एक बार फिर परिजनों के घाव फिर हरे हो गये। उपजिलाधिकारी मनीष कुमार ने इसकी पुष्टि करते हुए बताया कि, लांसनायक चंद्रशेखर हरबोला सेना की 19 कुमाऊं रेजीमेंट में तैनात थे। वर्ष 1984 में वह सियाचिन में तैनात थे। बताया जाता है कि, उनके दल को पाकिस्तान सेना के खिलाफ मेघदूत आपरेशन की जिम्मेदारी दी गयी।

- **दुनिया के सबसे दुर्गम युद्ध क्षेत्र सियाचिन से 38 साल बाद उत्तराखण्ड के एक जवान का शव बरामद हुआ है।**